

## व लयम हॉगर्थ (William Hogarth)

व लयम हॉगर्थ William Hogarth अठारहवीं शताब्दी के इंग्लैंड के एक महान चित्रकार, उत्कीर्णक (engraver) और सामाजिक आलोचक थे। उनका जन्म 10 नवम्बर 1697 को लंदन के Smithfield में हुआ था। वे एक ऐसे युग में सक्रिय थे जब इंग्लैंड में सामाजिक वषमता, नैतिक वघटन और राजनीतिक पाखंड अपने चरम पर थे। हॉगर्थ ने अपनी कला के माध्यम से इन समस्याओं को चित्रित किया और अंग्रेजी समाज का एक सटीक, तीखा और व्यंग्यात्मक चित्र प्रस्तुत किया। उन्होंने चित्रों की श्रृंखलाएँ बनाईं जो केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं थीं, बल्कि वे सामाजिक टिप्पणी और नैतिक शिक्षा का भी माध्यम थीं।

हॉगर्थ को ब्रिटिश चित्रकला में नैतिक यथार्थवाद और कथा-चित्रण की परंपरा का प्रवर्तक माना जाता है। वे पहले ब्रिटिश कलाकार थे जिन्होंने पूर्णतः राष्ट्रीय वषयों पर काम किया और ब्रिटेन की सामाजिक संरचना को केंद्र में रखकर कला का सृजन किया।

हॉगर्थ का परिवार साहित्यिक प्रवृत्त का था। उनके पिता एक लैटिन लेखक थे, लेकिन आर्थिक असफलताओं के कारण उन्हें कर्ज की जेल में भी रहना पड़ा। इन अनुभवों ने Hogarth को सामाजिक असमानताओं और न्याय प्रणाली की कठोरता के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बना दिया। उन्होंने प्रारंभ में एक उत्कीर्णक (engraver) के रूप में काम करना शुरू किया और कताबों के चित्र, वजापन और व्यावसायिक चह्न बनाए। लेकिन जल्दी ही उन्होंने अपनी अलग पहचान बनानी शुरू की, जब उन्होंने सामाजिक वडंबनाओं को चित्रों के माध्यम से उजागर करना आरंभ किया।

**कलात्मक शैली और शैलीगत विशेषताएँ**

हॉगर्थ की कला यथार्थवादी थी, परंतु यह यथार्थ केवल शय नहीं था, बल्कि उसमें नैतिक और व्यंग्यात्मक भावनाएँ भी गहराई से जुड़ी थीं। वे समाज के भ्रष्ट, पाखंडी और पतित चरित्रों को चित्रित करते हुए उन पर कटाक्ष करते थे, लेकिन साथ ही उनके चित्रों में सहानुभूति और चेतावनी का स्वर भी होता था।

उनकी शैली में नाटकीय संरचना, सजीवता और कथा की निरंतरता प्रमुख विशेषताएँ थीं। उन्होंने चित्रों को एक श्रृंखला (series) के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे एक पूरी कहानी रची जा सके। वे symbolism और allegory (रूपक) का प्रयोग करते हुए गहरे सामाजिक सन्देश देते थे। उनके चित्रों में चेहरों के भाव, परिधान, पृष्ठभूमि की वस्तुएँ – सब कुछ कथा का हिस्सा बनते थे।

## प्रसद्ध कृतियाँ

### **A Harlot's Progress (1732)**

यह छह चित्रों की एक श्रृंखला है, जो Moll Hackabout नामक एक युवा ग्रामीण लड़की की कहानी कहती है। वह लंदन आती है और धीरे-धीरे वेश्यावृत्त की दुनिया में फंसती है। इस श्रृंखला के प्रत्येक चित्र में उसके पतन की एक नयी अवस्था दिखाई गई है, जहाँ उसका शोषण, गरावट, गरफ्तारी और अंततः मृत्यु हो जाती है। यह चित्रण केवल एक स्त्री की त्रासदी नहीं, बल्कि उस समाज की आलोचना है, जो नैतिकता के नाम पर महिला-शोषण को अनदेखा करता है।

### **A Rake's Progress (1735)**

यह Hogarth की सबसे प्रसद्ध श्रृंखलाओं में से एक है, जिसमें आठ चित्र हैं। यह Tom Rakewell नामक एक युवक की कहानी है जो अपने पता की संपत्ति को बलासता, जुए, वेश्याओं और झूठे दोस्तों में नष्ट कर देता है। अंततः वह पागलखाने में पहुँचता है। इस चित्रण में Hogarth ने युवा वर्ग को नैतिक पतन और भोगवाद के खतरों से आगाह किया है।

### **Marriage A-la-Mode (1745)**

यह छह चित्रों की एक अत्यंत प्रभावशाली श्रृंखला है जो एक कुलीन परिवार द्वारा धन और प्रतिष्ठा के लिए अपने पुत्र का ववाह एक व्यापारी की पुत्री से करने की कहानी कहती है। ववाह के पश्चात पति-पत्नी दोनों व्यभिचार में लप्त हो जाते हैं और कथा त्रासद परिणाम पर समाप्त होती है। इस चित्रमाला के माध्यम से Hogarth ने वैवाहिक संस्था, प्रेमहीन गठबंधनों और सामाजिक मुखौटों की तीखी आलोचना की।

### **Beer Street and Gin Lane (1751)**

यह दो वरोधाभासी चित्र हैं। *Beer Street* में मजदूर वर्ग को बीयर पीते हुए स्वस्थ, हंसमुख और उत्पादक दिखाया गया है, जबकि *Gin Lane* में उसी वर्ग को जिन (एक प्रकार की शराब) के नशे में बीमार, भूखे, अपराधी और आत्महत्या करते हुए दिखाया गया है। यह Hogarth का सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियान था, जो समाज को नशीले पदार्थों के दुष्परिणामों से अवगत कराता है।

### **The Four Stages of Cruelty (1751)**

इस श्रृंखला में Hogarth ने बताया कि एक युवक पहले पशुओं पर अत्याचार करता है, फिर मनुष्यों पर हिंसा करता है, और अंततः एक हत्यारा बनता है। उसकी मृत्यु के बाद उसके शव को वैज्ञानिक प्रयोग के लिए चीर-फाड़ दिया जाता है। इस श्रृंखला का उद्देश्य समाज को यह दिखाना था कि अगर छोटी क्रूरताओं की अनदेखी की जाए, तो वे बड़े अपराधों का रूप ले सकती हैं।

कानूनी और सामाजिक योगदान

हॉगर्थ ने न केवल चित्रों से नैतिक शिक्षा दी, बल्कि कलाकारों के अधिकारों की रक्षा के लिए भी कार्य किया। उन्होंने 1735 में एक अधिनियम पारित करवाया, जिसे 'Hogarth's Act' कहा जाता है, जिसके अंतर्गत कलाकारों के कार्यों की नकल और अवैध पुनरुत्पादन पर रोक लगाई गई। यह कॉपीराइट कानून की दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम था।

हॉगर्थ का निधन 26 अक्टूबर 1764 को हुआ। उनकी मृत्यु के समय तक वे समाज में एक प्रभावशाली और सम्माननीय कलाकार बन चुके थे। उनकी कला और चित्रकला ने अंग्रेज़ी चित्रकला को सामाजिक चेतना और नैतिक जिम्मेदारी से जोड़ा।

उनकी चित्र-श्रृंखलाएँ आज भी British Museum, National Gallery और Tate Britain जैसे संस्थानों में संरक्षित हैं और ब्रिटिश कला में यथार्थवादी नैतिक व्यंग्य की परंपरा की नींव मानी जाती हैं। हॉगर्थ ने एक ऐसी कलात्मक भाषा का विकास किया जो हास्य, करुणा, और सामाजिक जागरूकता का समन्वय करती है।

हॉगर्थ ने चित्रकला को एक सामाजिक शास्त्र बना दिया। उन्होंने लंदन की गलियों, न्यायालयों, वेश्यागृहों, और मध्यमवर्गीय घरों की वडंबनाओं को चित्रित कर समाज के सामने एक दर्पण रख दिया। उनकी कला न तो केवल सुंदरता के लिए थी, न ही केवल आलोचना के लिए, बल्कि वह एक गहरी नैतिक चेतना से प्रेरित थी, जो आज भी प्रासंगिक है।